यूजीसी केयर सूची में
सम्मिलित पत्रिका

52 वर्षों से निरंतर
दक्षिण से प्रकाशित

जनवरी - मार्च, 2024

हिन्दी अकादमी, हैदराबाद ISSN 2277 - 9264

संकल्य

शोध और सृजन की त्रैमासिक पत्रिका

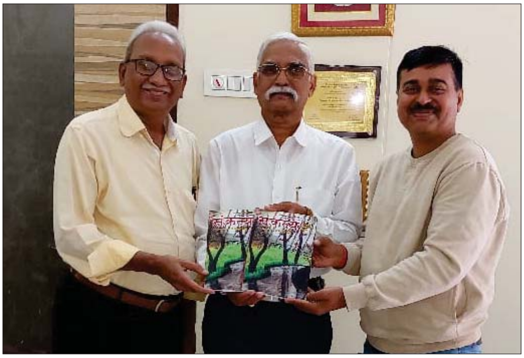

'संकल्य' के प्रधान संपादक प्रो. आर. एस. सर्राजु जी को पत्रिका भेंट करते हुए परामर्शदाता प्रो. प्रभाकर त्रिपाठी एवं संपादक डॉ. गोरख नाथ तिवारी।

सिक्किम विश्वविद्यालय के एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. गोरख नाथ तिवारी को सम्मानित करते हुए प्रो. प्रदीप के. शर्मा तथा डॉ. चुकी भूटिया।

भाषा एवं साहित्य संकाय, सिक्किम विश्वविद्यालय, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि माननीय राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी, कुलपति प्रो. अविनाश खरे जी, साहित्यकार श्री एस.डी. ढकाल, कुलसचिव प्रो. लक्ष्मण शर्मा, प्रो. रोजी चामलिंग, प्रो. प्रदीप के. शर्मा, प्रो. विनोद कुमार मिश्र, डॉ. राजेश्वर प्रसाद एवं डॉ. गोरख नाथ तिवारी व अन्य।

जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सांबा, भारतीय शिक्षण मंडल, विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान एवं भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित भारतीय भाषा सम्मेलन में मुख्य अतिथि, विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति तथा भारतीय शिक्षण मंडल, जम्मू-कश्मीर एवं लद्दाख के अध्यक्ष प्रो. संजीव जैन का स्वागत करते हुए हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. भारत भूषण। भाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते अतिथि।

ISSN : 2277-9264

यू. जी. सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल

मधुसूदन चतुर्वेदी एवं प्रो. बैजनाथ चतुर्वेदी कीर्ति स्तंभ

स्थापना वर्ष : 1956

संकल्य

त्रैमासिक

वर्ष : 52 : अंक–1, जनवरी–मार्च, 2024

प्रधान संपादक

प्रो. आर. एस. सर्राजु

प्रेरणास्रोत

विवेकी राय एवं
प्रो. टी. मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार

सुश्री कविता ठाकुर

संपादक

डॉ. गोरखनाथ तिवारी
डॉ. शशिकांत मिश्र

परामर्शदाता मंडल

प्रो. टी. आर. भट्ट
प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल
प्रो. दिलीप सिंह
प्रो. तेजस्वी कट्टीमनी
प्रो. नंद किशोर पांडेय
प्रो. शुभदा वांजपे
प्रो. जयंत कर शर्मा
प्रो. प्रभाकर त्रिपाठी
श्री ओम धीरज
श्री रूद्रनाथ मिश्र

प्रबंध संपादक

रेखा तिवारी

प्रूफ रीडर

प्रमोद कुमार मणि त्रिपाठी

सम्मानीय संरक्षक

श्री राजेश्वर तिवारी, आई.ए.एस.
श्री लाल जी राय, आई.ए.एस.
श्री जितेंद्र रेड्डी, पूर्व संसद सदस्य
प्रो. आर. के. मिश्रा (विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री)

प्रकाशक

डॉ. गोरखनाथ तिवारी
सचिव : हिंदी अकादमी, हैदराबाद

संपादकीय कार्यालय

प्लॉट नं. 10, रोड नं. 6, समतापुरी कॉलोनी
न्यू नागोल के पास, हैदराबाद– 500 035 (तेलंगाना)

संकल्प (त्रैमासिक)

- प्रकाशित सामग्री की रीति–नीति या विचारों से **हिंदी अकादमी, हैदराबाद** या संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।
- **'संकल्य'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल हैदराबाद न्यायालय के अधीन होंगे।
- **हिंदी अकादमी** तथा हिंदी सेवा के लिए समर्पित **'संकल्य'** त्रैमासिक के सभी पद अवैतनिक हैं।

शुल्क भेजने का पता :

ऑनलाइन संकल्य की सदस्यता शुल्क भेजने हेतु पृष्ठ 48 पर बैंक डिटेल देखें।

मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट **हिंदी अकादमी** के नाम

सचिव : डॉ. गोरखनाथ तिवारी
फ्लैट नं. 258/ए, ब्लॉक नं.11, तीसरी मंजिल,
जनप्रिया टाउनशिप, मल्लापुर
हैदराबाद– 500 076 (तेलंगाना), ई–मेल : **hindiakadami@gmail.com**
फोन : 09441017160/9032117105

मूल्य :

एक अंक का मूल्य रु. 125/–
वार्षिक : रु.500/–, **आजीवन सदस्यता :** रु.6,000/– (व्यक्तिगत),
संस्थागत आजीवन : रु.7,500/–, संस्थाओं के लिए : **वार्षिक** सदस्यता : रु. 800/–,
संरक्षक सदस्यता शुल्क : रु.7,500/–

आवरण चित्र

- **श्री प्रज्ञान कश्यप** (चित्रकार), **चेन्नई**

मुद्रक :
कर्षक आर्ट प्रिंटर्स
40–ए.पी.एच.बी.
विद्यानगर, हैदराबाद–500 044
फोन : 040–27618261, 27653348

संकल्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु Kruti Dev 010 या Unicode Mangal फ़ांट में सामग्री टाइप करवाकर ई–मेल : hindiakadami@gmail.com पर भेजें।

ISSN 2277-9264/यू. जी. सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल RNI No. 25388/74

संकल्य त्रैमासिक

वर्ष : 52 : अंक–1, जनवरी–मार्च, 2024

अनुक्रम Contents

संपादकीय

हिंदी शोध : प्रो. आर. एस. सर्राजु 05

आलेख

1. भारतीय ज्ञान परंपरा और अनुवाद : प्रो. सदानंद भोसले 07
2. 'मेरे संधि पत्र' उपन्यास में नारी जीवन की त्रासदी : डॉ. सुनील कुमार यादव 11
3. जनजातीय हिंदी कहानियों में स्त्री समस्याएँ : टी. प्रताप सिंह 17
4. हिंदी साहित्य में दलित साहित्य का स्थान और महत्व : डॉ. संदीप कुमार 21
5. नीरजा माधव का 'यमदीप' और स्त्री चेतना : डॉ. अनिशा 27
6. उषा प्रियंवदा की कहानियों में मनोग्रंथियों का प्रभाव : डॉ. लेखा पी. 33
7. निराला की कहानियों में ग्रामीण जीवन के विविध आयाम : डॉ. दिनेश साहू 38
8. उच्च शिक्षित युवा का दर्द और दीक्षांत : डॉ. गोरख नाथ तिवारी 42
9. डॉ. भूपेन हाजरिका के गीतों में समाज, संहित और संप्रीति का प्रस्फुटन : डॉ. अखिल चंद्र कलिता 49
10. फणीश्वर नाथ रेणु कृत 'मैला आँचल' में यथार्थ : डॉ. राजेन सिंह चौहान 54
11. इक्कीसवीं सदी की कहानियों में स्त्री विमर्श : डॉ. खुदुस ए. पाटील 59
12. नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री : डॉ. नीलांबिके पाटील 64
13. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी और कन्नड़ उपन्यासों का स्वरूप : डॉ. मेहराजबेगम सैय्यद 67
14. हिंदी और तेलुगु भाषाओं में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली की संरचना : डॉ. सूर्य कुमारी पी. 72

15. सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में समकालीन जीवन की विसंगतियाँ	: डॉ. अरुण प्रसाद रजक	81
16. पर्यावरण और उपन्यास गंगामैया	: डॉ. किरण बाला अरोड़ा	85
17. 'बैल की टाँग' कहानी में चित्रित जातिभेद	: कुमारी अनीता	91
18. हिंदी लघुकथा साहित्य में किन्नर सघर्ष	: पट्टेम लक्ष्मी प्रसन्ना	97
19. समकालीन दलित कथा साहित्य और नारी मुक्ति संघर्ष	: माया शर्मा	102
20. नासिरा शर्मा के साहित्य में नारी संघर्ष	: रेणु कुंडू एवं डॉ. सुमन राठी	106
21. 'एक सवाल : तीन तलाक' उपन्यास में चित्रित स्त्री अस्मिता	: रेणु	110
22. 'यही कहीं था घर' उपन्यास में नारी जीवन की त्रासदी	: अफशाना कादिर	114
23. 'पराया देश' कहानी में अभिव्यक्त भारतीय मन की पीड़ा	: किरण कटोच	117
24. 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' का शैली वैशिष्ट्य	: बिजेंद्र शर्मा एवं डॉ. सोनम	121
25. कुषाणकालीन शैव प्रतिमाओं एवं मुद्राओं में यूनानी प्रभाव	: आकाश वालिया एवं प्रो. राकेश कुमार शर्मा	127
26. 'राग दरबारी' उपन्यास में लोकतांत्रिक मूल्य	: अर्पणा कुमारी	132
27. नेपाल में गणतंत्र की ओर परिवर्तन की प्रक्रिया	: मिथिलेश कुमार एवं डॉ. अर्जुन कुमार यादव	138
28. भारत में महिला अधिकारिता के मुद्दे और चुनौतियाँ	: शिवम सिंह एवं डॉ. अजीत कुमार सिंह डॉ. सुशील कुमार सिंह	145
29. अफगानिस्तान संकट और भारत का दृष्टिकोण	: डॉ. योगेंद्र कुमार धुर्वे	151
30. तिब्बत की मुक्ति साधना	: रितु एवं डॉ. अनिशा	157

संपादकीय

हिंदी शोध

प्रो. आर. एस. सर्राजु

भारत में शास्त्रार्थ की लंबी परंपरा दिखाई देती है, जिसके बल पर विभिन्न ज्ञान के क्षेत्रों में शोध की दृष्टियों का विकास हुआ था। लेकिन यूरोपीय और अंग्रेजी ढंग की शिक्षा–पद्धति के विकास के साथ–साथ शोध का चौखटा बदलता गया। जब 1911 में लुइजि पिओ तेस्सितोरी के द्वारा इटालियन भाषा में लिखित **"रामचरितमानस और रामायण"** पर डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन ने यह संस्तुति देते हुए लिखा था कि यह कार्य प्राकृत भाषा में भाषाओं के अध्ययन करने वाले विद्वानों के लिए अनुसंधान पद्धति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है तब से हिंदी भाषा और साहित्य में अनुसंधान की नई परंपरा का प्रारंभ हो गया था। फ्लारेन्स यूनिवर्सिटी की ओर से इस लेख पर शोध की उपाधि मिली। इसलिए यहीं से हम आधुनिक समय के हिंदी अनुसंधान के आरंभ को स्वीकार कर सकते हैं। इसके बाद 1918 में जे. एन. कारपेन्टर को अपने शोध–प्रबंध 'द थियालजी ऑफ तुलसीदास' पर लंदन विश्वविद्यालय द्वारा 'डॉक्टर ऑफ डिविनिटी' की उपाधि मिली। फिर 1930 में उसी विश्वविद्यालय से मोहिउद्दीन कादरी को 'हिंदुस्तानी फोनेटिक्स' विषय पर पी.एच–डी. की उपाधि मिली। इस तरह से हिंदी भाषा और साहित्य विषयक शोध यूरोपीय विश्वविद्यालयों से प्रारंभ हुआ था।

1931 में श्री बाबूराम सक्सेना ने 'इवल्यूशन ऑफ अवधी' विषय पर प्रयाग विश्वविद्यालय में डी.लिट. के लिए अपना शोध–प्रबंध प्रस्तुत किया था। भारतीय विश्वविद्यालय के द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि के लिए प्रस्तुत हिंदी विषयक प्रथम शोध–प्रबंध यही था। लेकिन इस शोध–प्रबंध को संस्कृत विभाग के अंतर्गत उपाधि के लिए प्रस्तुत किया गया था। भारतीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में हिंदी साहित्य संबंधी विषय पर सर्वप्रथम शोध–प्रबंध 'श्री पीतांबर दत्त बड़थ्वाल' के द्वारा 1934 में प्रस्तुत किया गया था 'द निर्गुण स्कूल ऑफ हिंदी पोयट्री' विषय पर।

आरंभ में भक्ति साहित्य और भाषा विषयक शोध–प्रबंध प्रस्तुत किए गए थे। कुल मिलकर स्वतंत्रता से पहले 39 शोध–प्रबंध प्रस्तुत हुए थे। बनारस, प्रयाग, आगरा, पंजाब, नागपूर, कोलकत्ता, पटना विश्वविद्यालय क्रमशः हिंदी अनुसंधान के केंद्र बन गये। स्वतंत्रता के बाद धीरे–धीरे भारत के लगभग 150 से भी अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी विषयक शोध हो रहे हैं। पिछले सौ वर्षों में 8 हजार से अधिक लोगों को पी.एच.डी. की उपाधियाँ मिल चुकी हैं। वर्तमान समय में हर वर्ष लगभग 300 से अधिक हिंदी शोधार्थियों को शोध की उपाधियाँ मिल रही हैं।

21वीं सदी में भारत ज्ञान आधारित समाज के रूप में विकसित हो रहा है। फिर भी इधर पिछले दो–तीन दशकों से हिंदी अनुसंधान के क्षेत्र में कुछ कमजोरियाँ महसूस की जा रही हैं। शोध विषयों की पुनरावृत्ति हो रही है। शोध–प्रबंध लेखन की प्रक्रिया के मानकों को लेकर प्रश्न चिन्ह खड़ा किया जा रहा है। शोधार्थी शोधपरक उपाधियाँ प्राप्त करने के बावजूद निराशाजनक व्यक्तित्व का परिचय दे रहे हैं। हिंदी शोध की दिशा और शोध की प्रासंगिकता और उपयोगिता पर भी प्रश्न उठ रहे हैं। शोध की दिशा को नियंत्रित करने वाली व्यवस्थाएँ कमजोर होती जा रही हैं। शोध के मूल्यांकन में भी लापरवाही दिखाई दे रही है। ऐसी परिस्थितियों में हिंदी शोध को योजना बद्ध रूप में सृदृढ़ बनाने और विकसित करने के लिए हिंदी अकादमिक जगत को वर्तमान समय के भारत की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए नये सिरे से सोचना पड़ेगा। नई शिक्षा नीति में उल्लिखित अंतर्विद्यावर्ती ही नहीं, बहुलविद्यावर्ती शोध की ओर ध्यान देते हुए कोर्सवर्क निर्धारित करना पड़ेगा। तकनॉलजी से अनुप्रेरित समाजों के भविष्य की संभावनाओं को दृष्टि में रखते हुए आत्मनिर्भर और स्वयं समृद्ध भारत के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ने के लिए हिंदी शोध के क्षेत्र में हमें सोचना पड़ेगा।

प्रधान संपादक